सूर-वात्सल्य केचितेरेकवि

डॉ.नरेन्द्रपानेरी, सहआचार्य(हिंदी)
श्रीगोविन्दगुरुराजकीयमहाविद्यालयबाँसवाड़ा (राज०)

सूर का वात्सल्यावर्णन मनोविज्ञान - भक्ति और दर्द का ऐसा पावान संगम है जिसमें स्नान करके पाठक , श्रोता का विगत कलुषही धुल जाता है। सैकड़ों वर्षों से कही जान वाले थे उक्तियाँ सत्य प्रतीत होती है कि "सूर कवित्त सु नि कौर नरजो नहीं, सिरचालन करे" और "सूर वात्सल्य हैऔर वात्सल्य सूर है' यह एक बड़ी आल्हादक और आश्चर्य पूर्ण बात है कि सूर से पूर्वी हिन्दी कवियों में किसी ने भी वात्सल्य र स का वर्णन न ही किया है। सूर ने पहली बार ही इतना सुन्दर कहा कि कहनेकोकुछ शेषनहींबचा वेवात्सल्य का कौनों कौना झांक आए है आचार्य शुक्ल ने भी कहा है- " वात्सल्य और श्रृंगार के क्षेत्रों का जितना अधिक उद्घाटन सूर ने अपनी बन्द आँखो से किया है , उतना किसी और कवि ने नहीं। इन दोनों रसों के प्रर्वतक भाव की जितनी मानसिक वृत्तियों और दशाओं का अनुभव सूर कर सके उतना अन्या कोई नहीं।"

सूरदास ने कृष्ण की बाल लीलाओं के साधारण से साधारण घटनाओं और चेष्टाओं का अत्यन्त विशद् वर्णन किया है। श्री कृष्ण के जन्म पर शिशु की रक्षा के लिए देवकी विकल हो जाती है। जिस माता के सात पुत्र जन्मते ही मार डाले गये हो ; उसके हृदय का आठवेपुत्रके जन्म पर बिलखना निस्संदेह बहुत करुण है। अत्यन्त कातर शब्दों में वह पति से कहती है-

" अहो पतिसी उपार कछ कीजै। जिहिं उपार अपनौ यह बालक राखि कंस सौ लीजै। "

वसुदेव बालक कृष्ण को गोकुल ले जाते को तैयार होते है तब उसको माता देवकीको शिशुसे बिछ डनेकादुख सह नहीं पाती है। उसके मुख से स्वतः, निकल पड़ताहै –' तबकतकंसरोकिराख्यौ वियबरु बाही दिन काहे ने मारी' वसुदेव पुत्र नन्द और यशोदा के पुत्र के रूप में पलने लगा। बच्चे को सुलाने के लिए माता का उ सको पालने में सुलाना और जोर-सोर का वर्णन सूर ने करत प्रकार किया है

जसोदा हरि पालने झुलावै।

हलरावे दुलराई मल्हावै, जोई सोइ कछु गावै ।।

मेरे लाल को आउ निंदरिया, काहैन आनिसुवायै।

तू काहे नहि बेगहि आयें, तोकी कान्ह बुलावे ।।

लोरसुनतेकृष्ण रोनेलगतेहैतो उसे सोया जान यशोदा 'करि करि सैन बतायें ' इस प्रकार सूर कृष्ण की बाल लीलाओं का क्रमशः वर्णन करते हुए कृष्ण के घुटनों के बल चलने है एवं बाल सुलभ चंचलता कावर्णन करते हुए कह रहे है-

किलकत कान्ह घुटरुवनि आवत

मनिमय कनक नन्द के आंगन मुख प्रतिबिम्ब पकरिबेकोधावत

कबहुँ निरखहरि आष छाह को कर सी पकरन-चाहत

किलक हँसत राजत द्वे दतियां, पुनिपुनि निहिं अवनाहत

इसी प्रकार सूरु ने बालको की स्वभाविक चेष्टाओं एवं क्रीड़ाओं के साकार रूप प्रस्तुत किए हैं जिन्हें पढ़कर सहसा हृदय में वात्सल्य भाव उमड़ने लगता है

हरि अपने आँगन कछु गावत ।

तनक तनक चरनानि सौ नाचत मनहीं मनहिं रिझावत

बाँह ऊँचाई काजरी-धौरी, गैयनी टेरि बुलावत। ।।

कबहुँक बाबानन्द बुलावत, कबहुँकघर मै आवता

माखन तनक आपने कर लै, तनक बदन में नावत।।।

इसी प्रकार सूर में बालकों के हृदयस्थ मनोभावी , बुद्धि चातुर्थ स्पर्धा , खीझ, प्रतिद्वन्दिता अपराध करके उसे छिपानेकीकुशलता से सफाई देने की प्रवृतियों को हृदय हारी चित्र अंकित किए हैबलराम द्वारा चिढ़ाने परयशोदा से कृष्ण शिकायत करते हुए कहते हैं-

मैया मोहिं दाऊबहुत खिझायो ।

मोसों कहतमोल को लीन्हो, तू जसुमति कब जायो

काहा करो इहि रिस के मारे खेलन हो नहिं जात

पुनि पुनिकहत कौन है माता, को है तेरी तात्त।

गोरेनन्द जसोदा गोरी, तुम कतस्यमा गात।

चुटकी दे वै ग्वाल नचावत, हँसत सबै मुसुकात ।

तू मोही को मारनखीखी, दाउहिं कब हुँ नखीझे।

इसी प्रकार कान्हाएवं सखाओं द्वारा माखन चोरी करते समय पकड़े जाने पर यशोदा को 'मैया मैं नहिं माखन खायौ। ' कहकर समझाना तथा गोपियों द्वारा माखन चोरी करते समय पकड़े जाने पर कृष्ण के माध्यम से सूर कह रहे है-

मै जान्यौ यह घर अपनों हैया धौखे मैओंयो

देखत हो गोरस में-चीटी काढ़न को करि नायौ।

इसी प्रकार सूर में कृष्ण की बाललीला का सांगोपांग वर्णन करते हुए बालकों के संस्कारोत्सव , जन्मोत्सव पर आयोजित समारोह का वर्णन भी पूर्णतल्लीनता से किया है-

लोचनभरिभरि दोऊमाता, कनछेदन देखतजिय मुरकी

रोवत देखि जननि अकुलानि दियौ तुरत नौवाको बुरकी।

इसी प्रकार गो-चारण केलिए कृष्ण के मचलने कोसूर ने इसप्रकारका है-

मैया हौ गार-चरावन जैही

तू कहि महर नन्दबाबा सोबडोभयौ न डरै हौ।

इस प्रकार सूर ने कृष्ण के बाल्यकाल की प्रत्येक घटना का वर्णन किया है जिसके उद्धरण हम ऊपर देख चुके है। सूर ने केवल संयोगावस्था के वात्सल्य का ही वर्णन नहीं किया है अपितु जब अ क्रर के साथ कृष्ण मधुरा जा ते है तब सूर ने मातृ पितृ हृदय कीविकलता, विहलता एवं अधीरता को पूर्णतः मनोवैज्ञानिक आधार पर हृदय स्पर्शी रुप सेकहा है-

जसोदा बार बार यो भाखे । हे कोई ब्रज में हितू हमारो चलत गोपालहिं राखे ।

इस प्रकार कृष्ण के वियोग का हृदय द्रवक चित्र का चित्रण करते हुए सूरदास कह रहे है कि बारबार सन्देश भेजने पर भी कृष्ण नहीं आते है तो मातापुत्र की व्यवस्था चिन्तित हो जाती है। वह कहती है कि मधुरा में कान्हे की आदतों को जाननेवाले कोई नहीं तभी तो वह देवकी को सन्देश भेजती है-

सन्देसो देवकी सौ कहियौ ।

हो तौ धाइ तिहारे सूत की, दया करत ही रहियौ।

जद्यपि टेव तुम जानति ह्वे हो तऊ मोहि कहि आवे

प्रात होत मेरे लाल लड़त, माखन रोरी भावे।

माता के उक्त कथन में एक सार्वभौम एवं शाश्वत्त तथ्य का निरुपण हुआ है।इस तरह सुर ने वात्सल्य का बड़ा ही हृदयकारी वर्णन किया है जिसमें बालोचित्त चेष्टाओं एवं क्रीड़ाओं के अतिरिक्त मातृ हृदय की भी बड़ी मनोरम व्यंजना हुई है।

इस विषय पर काव्य रचना बहुत कम कवियों ने की है। आदिकवि वाल्मीकि के काव्य में अवश्य इसका घोड़ा बहुत वर्णन मिलता है। उसके पश्चात्त संस्कृत एवं अंग्रेजी साहित्य में इस विषय विषय का प्रायः अभाव है। ख्यातिप्राप्त विश्व कवियों में कवीन्द्र रवीन्द्र ने वात्सल्य के कुछ चित्र अवश्य खींचे है। किन्तु उनकीसूर से समता नहीं की जा सकती है।

सार यही है कि सूर के वात्सल्य वर्णन में तन्मयता है , स्वभाविकता है, सरलता है, मनोवैज्ञानिकता है,सहज आकर्षण है, हृदयको आकृष्ट करने की पूर्ण क्षमता है और उसमें शिशु जीवन की उल्लास एवं उमंग भरी शाखते सीकी अंकित है। इसी कारण सूर वात्सल्य के सम्राट बालमनोविज्ञान के पारखी, बालप्रकृति एवं मनोवृत्ति के चित्तेरें कहे जाते है

सन्दर्भसूची

1. *हिन्दी साहित्य कोश भाग-1*,धीरेन्द्र वर्मा, ज्ञानमण्डल,वाराणसी
2. *हिन्दी साहित्य कोश भाग-2,धीरेन्द्र वर्मा, ज्ञानमण्डल,वाराणसी*
3. *हिन्दी साहित्य का वृहत इतिहास,* नागरी प्रचारणी सभा, बनारस
4. *भ्रमरगीत सार* , रामचन्द्र शुक्ल, नागरीप्रचारणी सभा, वाराणसी
5. *त्रिवेणी,* रामचन्द्र शुक्ल, नागरीप्रचारणी सभा, वाराणसी
6. *सूर साहित्य,* हजारी प्रसाद द्विवेदी राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली
7. *भक्ति आन्दोलन और सूरदास का काव्य*, मैनेजर पाण्डेय, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली
8. *मध्यकालीन कविता के सामाजिक सरोकार*, डॉ.सत्यदेव त्रिपाठी,शिल्पायन,दिल्ली
9. *हजारीप्रसाद द्विवेदी ग्रन्थावली*, मुकुन्द द्विवेदी,राजकमल प्रकाशन,नई दिल्ली
10. *हिन्दी साहित्य का इतिहास*, आचार्य रामचन्द्र शुक्ल, नागरी प्रचारणी सभा,वाराणसी
11. *हिन्दी साहित्य और संवेदना का विकास,* रामस्वरूप चतुर्वेदी, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद
12. *हिन्दी साहित्य की भूमिका*, आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली